

SHRI T. K. MURTHY

Shri T. K. Murthy is the first mridangam artist to have played in United Nations accompanying Smt. M.S.Subbulakshmi. He is the first person to have devised a method and composed for percussions in complicated time signature systems of Carnatic Classical like 72 Melakartha thalas, 35 thalas and 108 thalas.

2. Shri Murthy was born to Shri Thanu Bhagavathar and Smt. Annapurni on August 13, 1924. At the age of eight, without any training, Murthy started playing mridangam. When the doyen of mridangam Thanjavur Shri Vaidyanatha Iyer visited his place, he found Murthy playing the instrument without any training. So Vaidyanatha Iyer decided to train him in mridangam. Vaidyanatha Iyer took Murthy to Tanjore, where Palghat Mani Iyer and Thambuswami, brother of Shri T. M. Thiagarajan, were also undergoing training. Murthy was more like a biological son to his Guru Vaidyanatha Iyer and his wife. They showered love and care on him. Thus, Murthy found his mentor in Vaidyanatha Iyer, to whom he still offers ceremonial oblations and rites as a true son. Murthy's family was full of court musicians and he is the fifth generation of musicians. The family has been in music continuously for 7 generations now. His son Shri T.K.Jayaraman was a music composer at All India Radio and grandson Shri Karthikeya Murthy is a film music composer.

3. Shri Murthy made his debut at the age of eleven, at Coimbatore, in a concert of Musiri Subramania Iyer with Karur Chinnaswami Iyer on violin and Tanjore Vaidyanatha Iyer on mridangam. That was the start of an illustrious career in which he has accompanied in more than 15,000 concerts so far. He has accompanied eminent artists over five generations, including: Harikesanallur Muthiah Bhagavatar; Ariyakudi Ramanuja Iyengar; Chembai Vaidhyanatha Bagavathar; Semmangudi Srinivasa Iyer; M. S. Subbulakshmi; Madurai Somasundaram; D. K. Jayaraman; M. Balamuralikrishna; Kunnakudi Vaidyanathan; Lalgudi Jayaraman; T. V. Sankaranarayanan; Mandolin U. Srinivas; T.N.Seshagopalan; D. K. Panama]; KJ.Yesudas. Apart from playing with eminent Indian percussionist like Zakir Hussain, 'Vikku' Vinayakaram, Sivamani amongst others. Although Murthy is a staunch follower of the Thanjavur style of mridangam, he was highly influenced by the artistry of the legendary Palani Subramaniam Pillai of the Pudukottai school of mridangam playing. This blend of the Thanjavur and Pudukottai schools has become the hallmark of T.K. Murthy's special style. His style also incorporates highly calculative patterns delivered with striking clarity and suddenness.

4. He has the unique achievement of accompanying five generations of guru-sishya parampara: Muthiah Bhaoavatar; Ramanathapuram C. S. Sankarsivam; T. N. Seshagopalan; Neyveli Santhanagopalan; Sriram Parthasarathy. He also has the distinction of having given accompaniment to Smt. M.S.Subbulakshmi for more than 40 years including for the concerts at United Nations and Edinburgh Festival. His versatility is such that he played for street drama, puppet show, Barathanatyam, etc. He also sings well in Carnatic and Hindustani styles, and plays Ghatam, Kanjira and other percussion instruments with ease. He is a master in Konnakol as well. He is the only artiste in the world to have composed and played Mohra and Korvai for 35 Talas, 72 Melakartha Talas and also for 108 Talas.

5. He has dedicated his whole life to the world of Carnatic music. Besides being an accomplished mridangam player, he is an excellent teacher too. He has proved to the world that he is a disciple of Thanjavur Vaidyanatha Iyer, who himself was one among the best mridangam teachers ever. He has several disciples who are prominent in the Carnatic music field in their own right, such as J.Vaidyanathan, K.V. Prasad, K.P.Parameswaran, B.Sivaraman, B.C.Manjunath in mridangarm B.S.Purushottaman, K.V.Gopalakrishnan, Anirudh Athreya on Khanjira; Guruprasad on Ghatam and Sivamani on Drums.

6. Plenty of Honours and awards were bestowed on him including:Laya Ratnakara from Sivananda Saraswati, Rishikesh; Kalaimamani from the T.N. Iyal Isai Nataka Mandram; Mridanga Bhoopathy from Chembai Vaidyanatha Bhagavathar; Mridanga Bhooshanam from Sri Sankaracharya of Kanchipuram; Sangeet Natak Academy Award; Palghat Mani Iyer Award by Percussive Arts Centre, Bangalore; Tala Vilas Award by Sur Singar Samsad, Bombay; Kerala Sangeet Nataka Academy Fellowship; Sangeetha Kalanidhi of The Music Academy; Sangeet Natak Academy Fellowship; Conferred with Honorary Doctorate from Arizona University, USA; Asthana Vidwan in Trivandrum Palace; "National Artiste" of Prasar Bharathi are some amongst a huge list of awards and recognition.

7. His class and mastery have reverberated around the world, such as in Sri Lanka, Edinburgh, Rome, United Nations, USA, Germany, Paris, Geneva, Canada, Malaysia, Singapore, UK, Russia etc.



श्री टि. के. मूर्ति

श्री टि. के. मूर्ति पहले ऐसे मृदंगम कलाकार हैं, जिन्होंने श्रीमती एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के साथ संगत करते हुए संयुक्त राष्ट्र में अपना मृदंगम-वादन प्रस्तुत किया। आप पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने तबले के लिए 72 मेलाकार्ता ताल, 25 ताल एवं 108 ताल जैसी कर्नाटकी उत्कृष्ट एवं जटिल ताल प्रणालियों की एक विधा प्रकल्पित की तथा इसकी रचना की।

2. आपका जन्म 13 अगस्त 1924 को श्री तनु भगवतार और श्रीमती अन्नपूर्णी के यहां हुआ था। आठ वर्ष की उम्र में, बिना किसी प्रशिक्षण के आपने मृदंगम बजाना शुरू कर दिया था। जब मृदंगम तंजाउर के डीन श्री वैद्यनाथ अय्यर आपके जन्म स्थान गए तो उन्होंने आपको बिना किसी प्रशिक्षण के मृदंगम वादन करते हुए देखा। इस प्रकार श्री वैद्यनाथ अय्यर ने तय किया कि वह आपको मृदंगम वादन की शिक्षा देंगे। श्री वैद्यनाथ अय्यर आपको तंजाउर ले आए, जहां पालघाट मणि अय्यर तथा थम्बूस्वामी, जो श्री टी. एम. त्यागराजन के भाई थे, भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। आप अपने गुरू वैद्यनाथ अय्यर एवं उनकी पत्नी के लिए जैविक पुत्र के समान थे। उन्होंने आपको बहुत सारा लाड़-प्यार दिया। इस प्रकार, श्री वैद्यनाथ के रूप में आपको एक गुरू मिल गए, जिनके प्रति आज भी आप एक सच्चे सपूत की तरह रस्मी नैवेद्य अर्पित करते हैं और धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। आपका परिवार दरबारी संगीतज्ञों से भरापूरा परिवार था और आप पांचवी पीढ़ी के संगीतज्ञ थे। आपके परिवार की अब लगातार 7 पीढ़ियां संगीत के क्षेत्र में हैं। आपका पुत्र श्री टी.के. जयरामन ऑल इंडिया रेडियो में एक संगीतकार है तथा पौत्र श्री कार्तिकेय मूर्ति एक फिल्म संगीतकार है।

3. आपने 11 वर्ष की उम्र में, कोयंबतूर में मुसिरी सुब्रमण्य अय्यर के संगीत समारोह में सारंगी पर करूर चिन्नास्वामी अय्यर तथा मृदंगम पर तंजोर वैद्यनाथ अय्यर के साथ पहली प्रस्तुति दी। यह एक उदीयमान करिअर की शुरूआत थी, जिसमें आपने अब तक 15,000 से भी अधिक संगीत समारोहों में संगत की है। आपने अन्य विभूतियों में प्रख्यात भारतीय तबला वादक जाकिर हुसैन, 'विक्कू' विनायकराम के अलावा हरि किशनल्लूर मुतैया भगवतार; सेमानगुडी श्रीनिवास अय्यर; एम एस सुब्बुलक्ष्मी; मदुरै सोमसुन्दरम; डी के जयरामन; एम.बाल मुरली कृष्ण; कुन्नाकुडी वैद्यनाथन; लालगुडी जयरामन; टी.वी. शंकर नारायणन; मंडोलिन यू. श्रीनिवास; टी.एन. शेषगोपालन; डी.के. पट्टामल; के.जे. यशुदास सहित पांच पीढ़ियों से अधिक प्रख्यात कलाकारों के साथ संगत की है। यद्यपि आप मृदंगम की तंजाउर शैली के कट्टर समर्थक हैं, फिर भी आप मृदंगम वादन के पुडुकोट्टाई घराने के मशहूर पलानी सुब्रमणियम पिल्लई के कौशल से अत्यधिक प्रभावित थे। तंजाउर और पुडुकोट्टाई घरानों का संयोजन आपकी विशिष्ट शैली का 'हालमार्क' बन गया है। आप अपनी शैली में स्पष्टता एवं फुर्ती के साथ प्रदत्त अत्यधिक कल्पनीय पैटर्नों को भी समाहित करते हैं।

4. आपने मुतैया भावोअवतार; रामनाथपुरम् सी एस शंकर शिवम्; टी. एन. शेष गोपालन; नेवेली शांतन गोपालन; श्रीराम पार्थसारथी के साथ गुरू-शिष्य परंपरा की पांच पीढ़ियों के साथ संगत करके एक अप्रतिम उपलब्धि हासिल की है। आपने संयुक्त राष्ट्र तथा एडिनबर्ग स्थित महोत्सवों में आयोजित संगीत समाराहों के लिए दी गई प्रस्तुतियों सहित 40 वर्षों से अधिक समय तक श्रीमती एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी के साथ की गई संगतों की विशिष्ट उपलब्धि हासिल की है। आप ऐसे प्रतिभा संपन्न कलाकार हैं जिन्होंने तुक्कड़ नाटक, कठपुतली-शो, भरत नाट्यम के लिए अपनी वादन प्रस्तुतियां दी हैं। आप कर्नाटकी एवं हिन्दुस्तानी शैली के अच्छे गायक भी हैं तथा घटम्, कंजीरा तथा अन्य तबला वाद्य यंत्रों को बखूबी बजा लेते हैं। इसके साथ ही आप कोन्नाकोल में निष्णात हैं। आप विश्व के एकमात्र ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने मोहरा और कोरवाई के 35 ताल, 72 मेलाकार्टा और 108 ताल की रचना की और वादन किया।

5. आपने अपना संपूर्ण जीवन कर्नाटकी संगीत को समर्पित कर दिया है। एक निष्णात मृदंगम वादक होने के अतिरिक्त आप एक उत्कृष्ट गुरू भी हैं। आपने विश्व में यह सिद्ध किया है कि आप तंजाउर वैद्यनाथ अय्यर के सच्चे शिष्य हैं, जो स्वयं अब तक के सर्वोत्तम मृदंगम गुरूओं में से एक थे। मृदंगम में जे. वैद्यनाथन, के. वी. प्रसाद, के.पी. परमेश्वरम, बी.शिवरामन, बी सी मंजूनाथ ; खजीरा पर बी.एस. पुरूषोत्तम, के.वी. गोपालकृष्णन, अनिरूद्ध अश्रेया; घटम् पर गुरूप्रसाद तथा ड्रम पर शिवामणि जैसे आपके कई शिष्य हैं जो अपने आप में कर्नाटक संगीत में सिद्धहस्त हैं।

6. आपको शिवानन्द सरस्वती, ऋषिकेश से लय रत्नाकर; टी. एन. अय्याल इसाई नाटक मन्द्रम से कलायममणि; चेम्बई वैद्यनाथ भगवतार से मृदंग भूपति; कोचीपुरम के श्री शंकराचार्य जी से मृदंग भूषणम; संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; पर्क्युसिव आर्ट सेंटर, बेंगलुरू द्वारा पालघाट मणि अय्यर पुरस्कार; सुर श्रृंगार संसद, बाम्बे द्वारा ताल विलास पुरस्कार; केरल संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप; संगीत अकादमी का संगीत कलानिधि; संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप सहित कई एक सम्मानों और पुरस्कारों से नवाज़ा गया। आपको आरिजोना विश्वविद्यालय, यू एस ए से मानद डॉक्टरेट, त्रिवेन्द्रम पैलेस के आस्थान विद्वान और प्रसार भारती के "नेशनल आर्टिस्टी" से भी नवाज़ा गया।

7. आपकी कलात्मक उत्कृष्टता ओर दक्षता श्रीलंका से लेकर एडिनबर्ग, रोम, यूनाइटेड नेशंस, यू एस ए, जर्मनी, पेरिस, जेनेवा, कनाडा, मलेशिया, सिंगापुर, यू के, रूस आदि तक विश्व में चारों तरफ गुंजायमान हुई।